5. अर्थव्यवस्था और आजीविका

★ **औधोगिक क्रांति -** अट्ठारहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध तथा उन्नीसवीं शताब्दी के पूर्वाध में कुछ पश्चिमी देशों के तकनीकी, सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक स्थिति में काफी बड़ा बदलाव आया। उत्पादन प्रणाली मे जो आधारभूत परिवर्तन हुआ जिसके फलस्वरूप इंसानों ने कृषि तथा उघोग धंधो में इंसानो के स्थान पर मशीनो का प्रयोग करना शुरू किया, इसे औघोगिक क्रांति (Industrial Revolution) के नाम से जाना गया।

"औद्योगिक क्रांति" शब्द का सबसे पहला प्रयोग "आरनोल्ड टायनबी" ने अपनी पुस्तक "लेक्चर्स ऑन दि इंस्ट्रियल रिवोल्यूशन इन इंग्लैंड" में सन् 1844 में किया। औद्योगिक क्रान्ति का सूत्रपात वस्त्र उद्योग के मशीनीकरण के साथ आरम्भ हुआ।

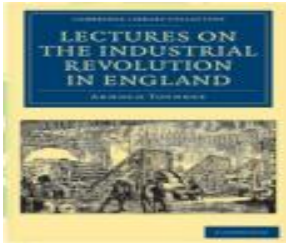

*** औधोगिक क्रांति का समय 1760 ई०-1890 ई०**

* औघोगिक क्रांति को वर्गविहीन क्रांति भी कहा जाता है।

★ **आदि औधोगिकीकरण का युग -** आदि औधोगिकरण का युग औघोगिकरण के पहले के समय को कहा जाता है। युरोप और इग्लैण्ड के कारखानो मे उत्पाद के समय के पहले का समय आदि औधोगिकरण का युग माना जाता है। इसमें सभी काम हाथ से होते थे। इस युग मे जो शहरी व्यापारी थे वे व्यापारी गाँव के किसानो से काम करवाते थे।

कारण –

1. शहरो से मांग पुरा ना होना।

2. गिल्ड (व्यापरीयो का संघ) के कारण नये व्यपारीयो को शहर में कम मौके मिलना।

3. वाड़ा बंदी आंदोलन ।

*** वाडा बंदी आंदोलन के कारण –**

इंग्लैंड में बाड़ाबंदी आंदोलन के दो कारण थे -

ऊन की बढ़ती माँग - अठारहवीं सदी में ऊन की माँग बढ़ने लगी थी। ऊन के अधिक उत्पादन के लिए अधिक भेड़ों को पालने की जरूरत थी। बड़े किसानों को इसमें अवसर नजर आया। भेड़ों के बड़े होते झुंड के लिए उन्हें बड़े चरागाहों की जरूरत हुई। इसलिए उन्होंने खुले खेतों पर बाड़े लगाकर उनपर कब्जा जमा लिया।

भोजन की बढ़ती माँग :- बाड़ाबंदी के दूसरे चरण में इंग्लैंड की जनसंख्या तेजी से बढ़ी। बढ़ती जनसंख्या का पेट भरने के लिए अधिक अनाज की जरूरत थी। बड़े किसानों ने खेती में विस्तार करना शुरु किया। इसके लिए उन्होंने खुले खेतों पर बाड़ाबंदी की ताकि खेती लायक जमीन को बढ़ा सकें।

*** गाँव तथा शहरों का संबंध -** उस समय गाँव तथा शहरो में लेन देन का सबंध था।

*** औधोगिकिकरण का शुरूआत इग्लैण्ड से हुआ था।**

*** बिट्रेन में औधोगिकीरण के आरंभ होने का कारण**

1. भोगौलिक स्थिती - परिवहन के साधन उपलब्ध थे। समुद्री बंदरगाह के उपस्थिति के कारण बंदरगाह अच्छे थे, जिससे कच्चा या पक्का माल ले जाने में सुविधाएँ होती थी। साथ ही साथ दुश्मनो से भी सुरक्षित था।

2. खनिज पद्वार्थो की उपलब्धता - फैक्ट्री को चलाने वाले सभी साधन वहाँ उपलब्ध थे जैसे लोहा, कोयला इत्यादि ।

3. कृषि क्रांति - उस समय ब्रिटेन में कृषि करने के नये तकनीक को अपनाया जाने लगा थे साथ में कृषि में मशीनों का उपयोग शुरू हो गया था।

4. मजदूरो की उपलब्धता - वाङा बंदी आंदोलन के कारन ब्रिटेन में सभी छोटे किसान मजदुर बन गये थे इसलिए मजदुर आसानी से मिल जाते थे।

5. कुशल कारीगर की उपलब्धता - किसी खास काम को करने के लिए ब्रिटेन में कुशल कारीगर भी आसानी से मिल जाते थे।

6. प्रर्याप्त पुजीं की उपलब्धता - ब्रिटेन में लोग खेती से अच्छी कमाई कर लेते थे इसलिए इनके पास प्रर्याप्त पूंजी भी उपलब्ध था।

7. प्रगतिशील व्यापारी वर्ग - वहाँ व्यापारी वर्ग के लोग अपने-अपने व्यापार में पूंजी निवेश करना चाहते थे जिससे अधिक से अधिक पैसा कमाया जा सके

8. संयुक्त व्यापारी कंपनी की स्थापना - वहाँ व्यापारी वर्ग के लोग पार्टनरशीप बीजनेस पर थे। भी अधिक निवेश करते

9. अनुकुल राजनीतिक स्थितियां - व्यापार के लिए ब्रिटेन में अनुकूल राजनितिक परिस्थिति था जो व्यापार को वढावा देते थे।

10. राजकीय संरक्षण - वहाँ के व्यापारियों को वहाँ के सरकार के द्वारा संरक्षण प्रदान किया जाता था जिससे व्यापारी लोग स्वतंत्र व्यापार कर सके।

11. जनसंख्या वृद्धि - ब्रिटेन में 18 वीं शताब्दी के समय तक जनसंख्या में अच्छी खासी वृद्धि हो गयी थी जिससे न तो मजदुर का दिक्कत होता था और न ही समान बेचने में।

12. 18 वीं शताब्दी के युरोपीय युद्ध - ब्रिटेन में उस समय तक हथियार बनने शुरू हो गये थे जिससे वह दुसरे देशों जैसे- यूरोप को हथियार बेचना शुरू कर दिया था जिससे अधिक मात्रा में पूंजी आता था।

13. वैज्ञानिको का योगदान - वैज्ञानिकों ने नये-नये तरह के मशीनों का आविष्कार किया जिससे काम आसानी से हो।

14. उपनिवेशवाद - दुसरे देशों पर कब्जा करके व्यापार करना।

★ नये यात्रिक अविष्कार –

18वीं शताब्दी नये नये मशीनो का अविष्कार हुआ जिसने औघोगिक क्षेत्र मे महत्वपूर्ण भूमिका निभाया था। जैसे - सूति कपड़ों के उघोग में, खनन में, परिवहन मे इत्यादि ।

★ सूती वस्त्र उघोग - कपड़ो की बुनाई तेजी से होने के कारण धागो की मांग बढने लगी। जिसको देखते हुए **1770 में एक वैज्ञानिक जेम्स हारग्रीव्ज ने एक मशीन बनाया जिस मशीन का नाम स्पिनिंग जेनी।** यह मशीन धागो की कताई करता था।

* मशीनो के आविष्कार से पहले सूती वस्त्र उघोग मजदूरो मे आश्रित था। जो अपने हाथो से चरखे के माध्यम से कपड़ो को तैयार करते थे। लेकिन **1773 में लंकाशायर के वैज्ञानिक जॉन के ने एक मशीन बनाया जिसका नाम रखा फ्लाइंग शटल मशीन** । जो कपड़ो की बुनाई तेजी से करता था।

*** 1769 में रिचर्ड आर्कराइट नाम के एक वैज्ञानिक के द्वारा एक मशीन ब नाम था वाटरफ्रेम या स्पीनिंग फ्रेम जिससे धागो की कटाई बहुत तेजी से** तरह से कई मशीने बनी जिसने इग्लैण्ड के सुती वस्त्र उघोगो को एक नयी बुलंदी पे पहुचा दिया।

★ वाष्प शक्ति उपयोग - शुरुआत में फैक्ट्री की मशीनो को चलाने के लिए पानी की सहायता लिया जाता था। बाद में टॉमस न्युकॉन नाम के वैज्ञानिक ने वाष्प इंजन को बनाया जो बहुत खर्चीला होने के कारण ज्यादा उपयोगी साबित नही हुआ। तो पुनः **1769 मे एक नया वाष्पइंजन बना जिसे जेम्स वाट नाम के वैज्ञानिक ने बनाया था।**

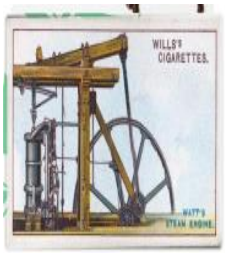

★ **लौह उघोग -** लौह उघोग का बहुत विकास हुआ। इस्पात का सिख लीया था। उत्पादन लोगो ने

★ **खाद्दान उघोग -** साधारण लैंप से हमेशा खाद्दानों में आग लगने का खतरा बना रहता था जिससे मजदुर लोग काफी डरे हुए रहते थे। अतः 1815 ई० में हम्फ्रीडेवी ने सेफ्टी लैंप बना दिया जिससे खाद्दान उघोग को बहुत विकास हुआ।

★ **रसायनिक उघोग -** होने होने लगा। कपड़ो को धोने तथा रंगने के लिए अलग-अलग तरह के सोडा, रंगो का प्रयोग

★ **परिवहन उघोग -** फैक्ट्रीयो से कच्चे माल लाने ले जाने के लिए सड़को का निर्माण होने लगा। सड़को पे चलने के लिए गाड़ियो का निर्माण होने लगा। एक देश से दूसरे देश ले जाने के लिए समुद्री जहाज का उपयोग होने लगा।

★ **इंग्लैण्ड में कारखानेदारी प्रथा -** पूजीपंती लोगो ने बड़े से रूम / जगहो पर मशीने लगाकर मजदूरो से काम करवाने लगे जिसे कारखानो का नाम दिया गया।

★औधोगिक परिवर्तन का स्वरूप

1. सुती वस्त्र उघोग - इग्लैण्ड का सुत्री वस्त्र उघोग औघोगिकरण के फलस्वरूप एक अलग ऊचाई पर पहुंच गया। 19 वी० शातब्दी (1850 ई० तक) इग्लैण्ड का सबसे बड़ा उघोग कपड़ा उघोग था।

2. लौहा और इस्पात - उघोग लौहा और इस्पात उघोग का बहुत तरक्की हुआ। नयी-नयी मशीनो का निर्माण होने लगा जिसके फलस्वरूप लौह इस्पातो का उपयोग अत्यधिक होने लगा। दूसरे देशो में जाने के लिए जहाजों का निर्माण करने लगा। सड़को परिवहन के निर्माण मे लौह इस्पातो का उपयोग होता था।

3. परंपरागत उघोगो का महत्व - हाथो से किये जाने वाले कामो का महत्व कम नही हुआ था।

4. परंपरागत उघोगो में परिवर्तन - हाथ के स्थान पे छोटे-छोटे मशीनो का इस्तेमाल होने लगा था।

5. तकनीकी बदलाव की धीमी गति - मशीनो का निर्माण मे धीमी गति।

★ औधोगिकीकरण का इग्लैण्ड पर प्रभाव –

1. कुटीर उधोग के जगह पर कारखानेदारी प्रथा का विकास अधिक तेज गति से होने लगा था।

2. नगरो के स्वरूप मे परिवर्तन होने लगा जैसे सडको का निर्माण होने लगा, जनसंख्या घनत्व बढ गया।

3. पूजींपती वर्ग का उदय औधोगिकीकरण के कारण पूंजीपति वर्गों का उदय होने लगा था।

4. श्रमिक वर्ग का उदय कारखाने में काम करने वाले श्रमिक वर्गों की संख्या बढ़ने लगी।

5. बाल श्रम के प्रथा का विकास कारखानों के मालिक ने अपना अधिक मुनाफा कमाने के लिए छोटे-छोटे बच्चों से कल कारखानो में काम करवाया जाने लगा।

6. स्त्री श्रम का विकास स्त्रियों ने भी पैसा कमाने के लिए कारखानों में काम करना शुरू कर दिया।

7. श्रमिक आंदोलन का विकास कम मजदूरी में मजदूरो से काम करवाते थे, मजदूरों के स्वास्थ्य पर ध्यान नही दिया जाता था। जिसका मजूदरो ने जमकर विरोध किया।

8. उपनिवेशावाद का विकास शुरुआत में इंगलैंड व्यापर के उद्देश्य से दुसरे देश में जाते थे लेकिन बाद में उसी देश पर कब्जा कर लेते थे।

9. हाथ से काम करने वाले श्रमिक - हाथ से काम करने वाले श्रमिको की स्थिति खराब नही थी, इनकी मांग बनी रही। क्योकिं इसके कुछ कारण है जैसे –

1. मजदूर सस्ते थे।

2. मशीनो का लागत ज्याद एवं रख रखाव बहुत खर्चीला था।

3. मजदूरो की छटनी कर सकते है।

4. कुछ वस्तुएँ केवल कुशल कारीगर ही बना सकते थें।

5. अमीर लोगो को हाथ से बने वस्तुए ही ज्यादा पसंद आते थे।

★ श्रमिको की आजीवका एवं उनका जीवन –

1. शहरो मे काम ढुंढना और रहने की समस्या - जब औधोगिकरण हुआ और बड़े बड़े मशीने लगने लगे तब लोग गाँवों से काम ढुढ़ने की तलाश में शहर आने लगे। काम न मिलने तक शहरों में रहना बहुत मुश्किल था, वे सरकारो द्वारा बनाये गये रैन बसेरो में या किसी पुल के नीचे अपनी राते बिताते थे।

2. छटनी की समस्या - काम मंदा होने पर मजदूरो को कारखानो से निकाल दिया जाता था।

3. कम मजदूरी - शहरी मजदूरो की एक बहुत बड़ी समस्या थी कम मजदूरी का होना। उनसे काम बहुत लिया जाता था, लेकिन मजदूरी बहुत कम दिया जाता था। जिससे उनका भरण पोषण में भी बहुत दिक्कत होती थी।

4. मजदूरो के द्वारा मशीनीकरण का विरोध - इग्लैण्ड में जब बड़े बड़े मशीनो का इस्तेमाल होने लगा तो मजदूरो को काम मिलना कम हो गया इसी कारण मजदूर मशीनो का विरोध करने लगे। मशीनो को उखाड़ने लगे, मशीनों को जलाना शुरू कर दिया।

5. श्रमिक आदोलन - जब मजदूरो ने फैक्ट्री में काम करना शुरू किया तो कारखानो के मालिक उन्हे कम मजदूरी में काम करवाने लगे। जिसके कारण श्रमिक इसका विरोध करने लगे और यह आंदोलन का रूप लेने लगा। 1830 48 के बीच इग्लैण्ड में कई श्रमिक आदोलन हुए। लेकिन इन आंदोलनो का कोई प्रभाव नही पड़ा।

* 1838 में इंगलैंड के मजदूरों के द्वारा एक आंदोलन हुआ जिसे चार्टिस्ट आंदोलन कहते थे, जिससे मजदूरो को कुछ सहुलियत मिली।

* इंग्लैंड में मजदूरो के द्वारा चलाया गया एक और आंदोलन था जिसे 10 घंटे का आदोलन कहा गया था। इस आदोलन के द्वारा मजदूर चाहते थे कि उनसे 10 घंटे का काम लिया जाय, ज्यादा काम नही लिया जाय।

★ भारत में निरूघोगिकरण –

• कल कारखानों की स्थापना के बाद भारत में कुटीर उद्योग बन्द होने की कगार पर पहुँच गया ? जिसे इतिहासकारों ने निरुद्योगीकरण की संज्ञा दी है।

1. इंग्लैंड में आयात कर लगाना।

2. चार्टर एक्ट (1813) के तहत निर्यात कर को हटा दिया गया।

★ भारतीय वस्त्र उघोग –

भारत का वस्त्र उघोग ईशा० की शताब्दी से लेकर 18 वीं शताब्दी तक अपने चरम सीमा पर था। भारतीय बुनकर के द्वारा बनाये गये कपड़ों की माँग बहुत ज्यादा थी।

इसलिए बाहरी व्यापारी भारतीय मजदूरो को ददनी (अग्रिम राशी) देकर कपडें बनवाते थे और दूसरे देशो को निर्यात करते थे।

★ युरोपीय व्यापारिक कंपनीयो का प्रभाव –

1. गुमुश्तो की नियुक्ती - ये एक अंग्रेजी कर्मचारी थे। ये बुनकरो से सीधा संबंध बनाते थे। बुनकर को ददनी (अग्रिम राशी) देकर एक निश्चित समय पर माल (कपड़ा) उठा लेते थे। गुमुश्तों लोग बुनकरों के लिए –

- कर्ज की व्यवस्था भी करते थे।
- माल की गुणवता की जांच भी करते थे।

नयी व्यवस्था का बुनकरो पर प्रभाव –

1. शुरुआत में उत्पादन में काफी वृद्धि हुई –

2. बाद में बुनकरो और गुमुशतो में टकराव बढ़ते गया।

3. कुछ बुनकरों ने अपने अंगूठों को काट लिया और धीरे-धीरे बुनकरो का पलायन होने लगा –

★ भारत में औधोगिकीकरण –

भारत में सबसे पहला मील 1851 ई० में बंबई में सूती कपड़ा मील खोला गया था। जिसे गुजराती तथा पारसी लोगो ने मिल कर खोला था। जिसमें सबसे पहला मील कावस जी नाना जी दाभार ने खोला था। ये पारसी समुदाय के थे। 1862 ई० तक बंबई में चार कपड़े मील खुल गयी। लेकिन आगे चलकर अहमदाबाद, मद्रास, बंबई,

- कानपुर मे भी कपड़ा मिल खुलने लगा।
- कानपुर मे पहला मील लगा - 1860

- 1854 - 1880 तक 30 मील लग गयी थी।
- 1880 - 1895 तक 39 मील लग गयी थी।
- 1895 - 1914 तक 144 मील लग गयी थी।
- 1917 में पहला जूट मील बंगाल / कलकत्ता में खुला।

★ भारतीय उघमी –

जमेशेद जी जीजी भॉय - यह पारसी थे। इन्होने जहाजो एक विशाल समूह बना लिया।
द्वारका नाथ टैगोर - यह बंगाली थी। इन्होने 6 संयुक्त कंपनीया खोली। लेकिन बाद में इन सभी उद्धमी को सताना शुरू किया और इनका धंधा बंद हो गया।

★ मजदूरो की उपलब्धता –

1. कुटीर उघोग - कुटीर उघोग लगभग समाप्त हो गये। लोग बेरोजगार हो गये। किसानो की खेती भी अच्छी नही चल रही थी। ऐसे मे लोग शहर की तरफ पलायन करने लगे और फैक्ट्रीयो मे काम पकड़ने लगे। इसलिए मजदूर आसानी से मिलने लगे।
जॉर्बर - मजदूरों को काम पर रखने के लिए यह लोगो को जॉब दिलाने का कार्य करते थे और बदले में लोगो से पैसे लेते थे।

★ भारत में औधौगिक विकास की विशेषताएं -

1. निर्यात उघोग को बढावा - लोगो ने कच्चा माल उत्पादित करना शुरू किया और वागवान लगाना शुरू किया, नील की खेती की, कोयला का उघोग शुरू किया।

2. भारतीय उघमियो में प्रतिस्पर्धा का अभाव - प्रतिस्पर्धा के अभाव के कारन भारतीय उधोग आगे नहीं बढ़ पाए।

3. स्वदेशी आंदोलनो का प्रभाव - खुद से कपडा बनाना शुरू कर दिया। भारतीय उधोग पर स्वदेशी आंदोलनों का बहुत गहरा प्रभाव पड़ा था। और लोग

4. प्रथम विश्व युद्ध के बाद औघोगिकारण में तेजी - प्रथम विश्व युद्ध के बाद औधोगिकारण में काफी तेजी देखने के लिए मिला जिसका कुछ कारण निम्न है।

1. प्रथम विश्व युद्ध के इग्लैण्ड के समय सेनाओ की आवश्यकता के अनूकूल समान बनने लगे जिससे वे भारत में कपडें भेजने में असमर्थ हो गये। इसका फायदा भारतीय कंपनीयो को हुआ और वे अपनी वस्तुओ का निर्यात करने लगे।

2. प्रथम विश्व युद्ध के बहुत दिनो तक होने के कारण इग्लैण्ड के सैनिको को उनकी आवश्कयता की चीजो की आपूर्ति में कमी होने लगी। इग्लैण्ड की कंपनी उतना माल तैयार नहीं कर पा रही थी, तभी भारतीये कंपनी अपने सामानो का निर्यात इग्लैण्ड करने लगे।

★ भारत में औधोगिकीकरण का प्रभाव

1. उधोगों का विकास – कई शहरों में नये-नये कारखाने खुलने लगे जिसमे बड़ी-बड़ी मशीनों का प्रयोग होने लगा।

2. नगरीकरण का विकास - जहाँ पर उधोग लगते थे वहाँ पर बाहर से भी मजदुर आकर काम करने लग जाते थे और धीरे-धीरे वह स्थान नगर बन जाता था।

3. कुटीर उद्योगो की अवनती - जब उधोग लगने लगे तो कुटीर उधोग धीरे-धीरे समाप्त हो गये।

4. कृषि एवं उघोग का संतुलन नष्ट होना - कुटीर उधोग बंद हो जाने से कृषि कार्य की तरफ लोग जयादा आकर्षित होने लगे और यहाँ कृषि एवं उधोग के बीच संतुलन नष्ट होने लगा।

5. सामाजिक विभाजन - समाज दो वर्गों में बंट गया पुजीपंती वर्ग और मजदूर / श्रमिक वर्ग

6. स्लम पद्धति का उदय - छोटे छोटे जगहो में ज्यादा लोग रहने लगे। जैसे बम्बई का चॉल इत्यादि ।

7. श्रमिक आदोलन शुरू हुआ और कुछ कानून बने जैसे –

- बाल श्रम को रोका जाना चाहिए।
- गभर्वत महिलाओ से काम नही लेना।
- समय-समय पर मजदूरी बढ़ाना और न्यूनतम मजदूरी रखना।
- काम का समय कम करना।

लघु और दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. औद्योगीकरण ने मजदूरों की आजीविका को किस तरह प्रभावित किया था?

उत्तर - औद्योगीकरण और कारखानेदारी प्रथा के विकास का मजदूरों की आजीविका पर बुरा प्रभाव पड़ा। जैसे- शहरों में उन्हें काम ढूँढ़ने तथा आवास तथा छँटनी की समस्या से जुझना पड़ा। उन्हें कम पारिश्रमिक पर ही लंबे समय तक काम करना पड़ता था। बेकारी की समस्या से त्रस्त मजदूर मशीनीकरण का विरोध करने लगे। वे संगठित होकर अपनी स्थिति में सुधार के लिए आंदोलन करने लगे।

2. औद्योगिक क्रांति के किन्हीं दो नकारात्मक प्रभावों को बताएँ।

उत्तर - औद्योगिक क्रांति के दो नकारात्मक प्रभाव निम्नलिखित हैं-

(i) औद्योगिकरण के परिणामस्वरूप बड़े पैमाने पर उत्पादन होना शुरू हुआ जिसकी खपत के लिए यूरोप में उपनिवेशों की होड़ शुरू हो गयी और आगे चलकर इस उपनिवेशवाद ने साम्राज्यवाद का रूप ले लिया।

(ii) औद्योगिक क्रांति के कारण समाज में पूँजीपति वर्ग एवं श्रमिक वर्ग का विकास हुआ। उद्योगों पर पूँजीपति वर्ग का नियंत्रण स्थापित हो गया एवं मजदूरों का शोषण आरंभ किया जिससे वे शोषण, गरीबी और भुखमरी के शिकार हो गए।

3. स्लम पद्धति की शुरुआत कैसे हुई ?

उत्तर – छोटे, गंदे और बिना सुविधा वाले स्थानों में जहाँ फैक्ट्री मजदूर निवास करते है वैसे आवासीय स्थलों को स्लम कहा जाता है। औद्योगिकीकरण के फलस्वरूप बड़े-बड़े कारखाने स्थापित हुए जिसमे काम करने के लिए बड़ी संख्या में गाँवों से मजदूर पहुँचने लगे। वहाँ रहने की कोई व्यवस्था नहीं थी। मजदूर कारखाने के निकट रहें, इसलिए कारखानों के मालिकों ने उनके लिए छोटे-छोटे मकान बनवाए। जिसमें सुविधाएँ उपलब्ध नहीं थीं। इन मकानों में हवा, पानी तथा रोशनी तथा साफ-सफाई की व्यवस्था भी नहीं थी। इस प्रकार औद्योगिकीकरण के फलस्वरूप स्लम पद्धति की शुरुआत हुई।

4. औद्योगिकीकरण से आप क्या समझते हैं?

उत्तर - औद्योगिकीकरण उस औद्योगिक क्रांति की देन है जिसमें वस्तुओं का उत्पादन मानव द्वारा न होकर मशीनों के उत्तर द्वारा होता है। इसमें उत्पादन बृहत् पैमाने पर होता है और जिसकी खपत के लिए बड़े बाजार की आवश्यकता होती है। अतः औद्योगिकीकरण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें उत्पादन मशीनों के द्वारा कारखानों में होता है। इस प्रक्रिया में घरेलू उत्पादन पद्धति का स्थान कारखाना पद्धति ले लेता है।

5. घरेलू और कुटीर उद्योग को परिभाषित करें।

उत्तर - स्थानीय स्तर पर चलाए गये उद्योग घरेलू और कुटीर उद्योग कहे जाते हैं। इनमें अपेक्षाकृत कम पूँजी और श्रम लगता है। ये राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। ये सामाजिक एवं आर्थिक प्रगति के शक्तिशाली औजार है। कुटीर उद्योग जनसंख्या के बड़े शहरों में पलायन को रोकता है।

6. औद्यौगिक क्रांति क्या है ?

उत्तर - अट्ठारहवीं शताब्दी में कुछ पश्चिमी देशों में उत्पादन प्रणाली में जो आधारभूत परिवर्तन हुआ जिसके फलस्वरूप इंसानों ने कृषि तथा उघोग धंधो में इंसानो के स्थान पर मशीनो का प्रयोग करना शुरू किया, इसे औधोगिक क्रांति (Industrial Revolution) के नाम से जाना गया।

7. औद्योगिक आयोग की नियुक्ति कब हुई? इसके क्या उद्देश्य थे ?

उत्तर - औद्योगिक आयोग की नियुक्ति सन् 1916 में हुई। औद्योगिक आयोग का मुख्य उद्देश्य था की भारतीय उद्योग तथा व्यापार के भारतीय वित्त से संबंधित उन क्षेत्रों का पता लगाना, जिसे सरकार सहायता दे सके।

8. फैक्ट्री प्रणाली के विकास के किन्हीं दो कारणों को बतायें। उत्तर फैक्ट्री प्रणाली के विकास के किन्हीं दो कारण निम्नलिखित थे-

(i) मशीनों एवं नये नये यंत्रों का आविष्कार करना

(ii) उद्योग तथा व्यापार के नये नये केंद्रों के विकास ने फैक्ट्री प्रणाली को विकसित किया।

9. विऔद्योगीकरण से आप क्या समझते हैं ?

उत्तर - कल कारखानों की स्थापना के बाद भारत में कुटीर उद्योग ज्यादा नुकसान वस्त्र उद्योग को हुई। बंगाल में अनेक अन्य उद्योगों को हुई हुई ई। जिसे इतिहासकारों ने

निरुद्योगीकरण की पर पहुँच गया ? इससे सबसे व्यवसाय अपना लिया। यही स्थिति इसके तहत –

1. इंग्लैंड में आयात कर लगा दिया गया।

2. चार्टर एक्ट (1813) के तहत निर्यात कर को हटा दिया गया

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. न्यूनतम मजदूरी कब पारित हुआ और इसके क्या उद्देश्य थे?

उत्तर - मजदूरों की आजीविका एवं उसके अधिकारों को ध्यान में रखते हुए सरकार ने सन् 1948 ई. में न्यूनतम मजदूरी कानून पारित किया।

उद्देश्य - न्यूनतम मजदूरी कानून 1948 के द्वारा कुछ उद्योगों में मजदूरी की दरें निश्चित की गयी। तथा दूसरी योजना में यहाँ तक कहा गया कि न्यूनतम मजदूरी उनकी ऐसी होनी चाहिए जिससे मजदूर केवल अपना ही गुजारा न कर सके, बल्कि इससे कुछ और अधिक हो, ताकि वह अपनी कुशलता को भी बनाये रख सके। इस कानून का मुख्य उद्देश्य था की मजदूरों के आर्थिक स्थिति को सुधारना।

2. कोयला एवं लौह उद्योग ने औद्योगीकरण की गति प्रदान की। कैसे ?

उत्तर - कोयला एवं लोहा उद्योग मशीनों को चलाने के लिए आवश्यक है। भारत में कोयला उद्योग 1814 से शुरू हुआ। वस्त्र उद्योग की प्रगति कोयले एवं लोहे के उद्योग पर बहुत अधिक निर्भर करती थी इसलिए अंग्रेजों ने इन उद्योगों पर अधिक ध्यान दिया।

सन् 1815 में हम्फ्री डेवी ने खानों में काम करने के लिए एक 'सेफ्टी लैंप' का आविष्कार किया। हेनरी ने एक शक्तिशाली भट्टी विकसित करके लौह उद्योग को और

अधिक बढ़ावा दिया। रेलवे के निर्माण से लौह उद्योग में तेजी आयी। इस तरह कोयला एवं लौह उद्योग औद्योगीकरण को गति दिया।

3. उपनिवेशवाद से आप क्या समझते हैं? औद्योगीकरण ने कैसे उपनिवेशवाद को जन्म दिया ?

उत्तर - अधिक लाभ के उद्देश्य से विकसित देशों द्वारा अविकसित देशों पर अधिकार कर उसकी सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक एवं उसके शासन प्रबन्ध पर नियंत्रण कर लेने को ही उपनिवेशवाद कहते हैं। औद्योगिक क्रांति के फलस्वरूप सर्वप्रथम उपनिवेशवाद का आरंभ इंगलैंड से हुआ। इंगलैंड के उद्योगों को कच्चा माल एवं वहाँ के कारखानों में निर्मित सामानों की बिक्री के लिए बाजार की आवश्यकता थी। जैसे-जैसे औद्योगीकरण की गति बढी वैसे-वैसे उपनिवेशीवाद में तेजी आई। इंगलैंड के अतिरिक्त फ्रांस और जर्मनो ने भी अपने उपनिवेश स्थापित किए। इसी क्रम में भारत इंग्लैंड के एक विशाल उपनिवेश के रूप में उभरा।

4. औद्योगिकीकरण के परिणामस्वरूप होने वाले परिवर्तनों पर प्रकाश डालें।

उत्तर - औद्योगिकीकरण के परिणामस्वरूप आर्थिक एवं सामाजिक जीवन में महत्त्वपूर्ण परिवर्तन हुए। जो निम्नलिखित हैं-

(i) नगरों का विकास :- औद्योगिकीकरण के कारण बहुत तेजी के साथ नगरों का विकास हुआ।

(ii) कुटीर उद्योगों का पतन :- बड़े-बड़े कारखानों की स्थापना से लघु एवं कुटीर उद्योग का पतन हो गया। कुटीर उद्योग में तैयार माल महंगा तथा कारखाने में उत्पादित सामान सस्ता था। इसलिए कुटीर उद्योग समाप्त होने लगे क्योंकि बाजार में उसकी माँग घट गयी थी।

(iii) समाज में वर्ग विभाजन :- औद्योगिकीकरण के फलस्वरूप समाज में तीन वर्गों का उदय हुआ पूँजीपति, बुर्जुआ तथा मजदूर वर्ग।

(iv) स्लम पद्धति की शुरुआत :- औद्योगिकीकरण के परिणामस्वरूप फैक्ट्री मजदूर शहर में छोटे-छोटे घरों में रहने लगे। जहाँ किसी प्रकार की सुविधा नहीं थी। इस प्रकार स्लम पद्धति की शुरुआत हुई।

(v) उद्योगों का विकास :- औद्योगिकीकरण के कारण भारत में कारखानों की स्थापना एवं नये-नये यंत्रों का आविष्कार हुआ। उद्योगों का बड़े स्तर पर विकास हुआ। लोहा एवं इस्पात, कोयला, सीमेंट, चीनी, कागज, शीशा और अन्य उद्योग स्थापित हुए जिनमें बड़े स्तर पर उत्पादन हुआ

1. औद्योगिकीकरण से आप क्या समझते हैं ?

उत्तर - 18वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध से उत्पादन में नई तकनीक और मशीनों का व्यवहार आरंभ हुआ। मानवश्रम के स्थान पर मशीन उत्पादन का काम करने लगी। उत्पादन की यह नई प्रक्रिया औद्योगिकीकरण कहलाती है।

औद्योगिकीकरण के परिणामस्वरूप कुटीर उद्योगों का स्थान कारखानों ने ले लिया। उत्पादन में वृद्धि हुई। वृहत् पैमाने पर उत्पादन होने से बड़े बाजार की आवश्यकता हुई। इससे पूँजीपति और श्रमिक वर्ग औद्योगिक व्यवस्था के प्रमुख स्तंभ बन गए। किसी देश के आधुनिकीकरण के लिए औद्योगिकीकरण प्रेरक तत्त्व है।

2. औद्योगिक क्रांति से आप क्या समझते हैं ?

उत्तर - औद्योगिक क्रांति का अर्थ उत्पादन प्रणाली में हुए उन आधारभूत परिवर्तनों से है जिनके फलस्वरूप जनसाधारण को अपनी परंपरागत कृषि, व्यवसाय एवं घरेलू उद्योग-धंधों को छोड़कर नए प्रकार के उद्योगों में काम करने तथा यातायात के नवीन साधनों के प्रयोग का अवसर मिला। यह क्रांति सर्वप्रथम इंगलैंड में 18वीं सदी के उत्तरार्द्ध में हुई। उद्योगों में मानवश्रम का स्थान मशीनों ने ले लिया। औद्योगिक क्रांति में न तो राजसत्ता का परिवर्तन हुआ और न ही रक्तपात। यह क्रांति किसी निश्चित अवधि या तिथि को नहीं हुई, इसका निरंतर विकास होता रहा।

3. 18 वीं - 19 वीं शताब्दी के यूरोपीय युद्धों ने औद्योगिकीकरण को कैसे बढ़ावा दिया ?

उत्तर - 18वीं शताब्दी में यूरोप में अनेक बड़े युद्ध लड़े गए। इनमें प्रमुख हैं सप्तवर्षीय युद्ध और अमेरिका का स्वतंत्रता संग्राम । इन युद्धों ने यूरोपीय राष्ट्रों की आर्थिक स्थिति दुर्बल बना दी। 19वीं शताब्दी के आरंभ में नेपोलियन बोनापार्ट ने भी अनेक युद्ध किए। इनका भी यूरोपीय राष्ट्रों की अर्थव्यवस्था पर बुरा प्रभाव पड़ा। इसके विपरीत ब्रिटेन को इन युद्धों से लाभ हुआ। नेपोलियन की 'महादेशीय व्यवस्था' की विफलता से इंगलैंड को आर्थिक लाभ हुआ। इससे औद्योगिकीकरण का मार्ग प्रशस्त हुआ। इन युद्धों ने दूसरे प्रकार से भी औद्योगिकीकरण को बढ़ावा दिया। युद्धों में प्रयुक्त होनेवाले सामानों की माँग बढ़ गई। इनकी आपूर्ति के लिए कल-कारखाने खोले गए। साथ ही उनकी उत्पादन क्षमता भी बढ़ाई गई। इससे औद्योगिकीकरण को बढ़ावा मिला।

4. 1850 के बाद ब्रिटिश सरकार ने अपने उद्योगों को विकसित करने के लिए क्या किया? इसका देशी उद्योगों पर क्या प्रभाव पड़ा ?

उत्तर - 1850 के बाद ब्रिटिश सरकार ने अपने उद्योगों को बढ़ावा देने के लिए 'मुक्त व्यापार' की नीति अपनाई। भारत से आयातित निर्मित वस्तुओं पर भारी बिक्रीकर, सीमाशुल्क और परिवहन कर लगाया गया। भारत से कच्चा माल का निर्यात किया जाने लगा। साथ ही, ब्रिटिश पूँजी से भारत में कारखानों की स्थापना की जाने लगी। अँगरेजों को विशेष औद्योगिक सुविधाएँ दी गईं। इससे देशी कुटीर उद्योगों पर बुरा प्रभाव पड़ा।

5. 1850-1914 तक के भारतीय उद्योगों की क्या विशेषता थी?

उत्तर - इस अवधि में वैसे उद्योगों को बढ़ावा दिया गया जो निर्यात करनेवाले सामानों का उत्पादन करते थे और जो राष्ट्र के लिए लाभदायक थे; जैसे- पटसन और चाय। साथ ही, वैसे माल का भी

उत्पादन हुआ जिसमें विदेशी प्रतिद्वंद्विता अधिक नहीं थी; जैसे- मोटा कपड़ा। प्रथम विश्वयुद्ध के दौरान भारतीय उद्योगों को लाभ हुआ। उनमें उत्पादित सामान के लिए देश-विदेश में मंडी मिली, ठेके मिले तथा कच्चा माल कम मूल्य पर उपलब्ध हुआ। उत्पादित माल के मूल्य भी बढ़ गए।

6. 'निरुद्योगीकरण' से आप क्या समझते हैं? भारतीय संदर्भ में इसकी व्याख्या करें।

उत्तर - ब्रिटिश आर्थिक नीतियों के कारण देशी उद्योगों में लगातार गिरावट आती गई। 19वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में मैनचेस्टर में बने कपड़ों का बड़े पैमाने पर आयात किया गया। इससे हथकरघा उद्योग बंदी के कगार पर पहुँच गया। सबसे बुरी स्थिति वस्त्र उद्योग की हुई। बंगाल में अनेक बुनकरों ने काम बंदकर दूसरा व्यवसाय अपना लिया । यही स्थिति अन्य उद्योगों की भी हुई। इस प्रकार, भारतीय कुटीर उद्योग समाप्त हो गए। इसे ही भारत में निरुद्योगीकरण कहा जाता है।

7. स्वदेशी आंदोलन का उद्योगों पर क्या प्रभाव पड़ा ?

उत्तर - 1905 के बंग-भंग आंदोलन में स्वदेशी और बहिष्कार की नीति से भारतीय उद्योग लाभान्वित हुए। धागा के स्थान पर कपड़ा बनाना आरंभ हुआ। इससे वस्त्र उत्पादन में तेजी आई। 1912 तक सूती वस्त्र का उत्पादन दोगुना हो गया। उद्योगपतियों ने सरकार पर दबाव डाला कि वह आयात शुल्क में वृद्धि करे तथा देशी उद्योगों को रियायत प्रदान करे। निर्यात में आई कमी की क्षतिपूर्ति के लिए भारतीय उद्यमियों ने सूती मिलों में वस्त्र का उत्पादन बढ़ा दिया। कपड़ा उद्योग के अतिरिक्त अन्य छोटे उद्योगों का भी विकास हुआ।

8. घरेलू उद्योग और कुटीर उद्योग को परिभाषित करें।

उत्तर - घरेलू उद्योग और कुटीर उद्योग स्थानीय स्तर पर चलाए जाते हैं। इनमें अपेक्षाकृत कम पूँजी लगती है। गाँधीजी के अनुसार, ये भारतीय सामाजिक दशा के अनुकूल हैं। ये राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। ये सामाजिक एवं आर्थिक प्रगति तथा संतुलित क्षेत्रवार विकास के शक्तिशाली औजार हैं। ये उपभोक्ता वस्तुओं का निर्माण कम पूँजी से करते हैं। इनसे बड़े स्तर पर रोजगार उपलब्ध होते. हैं। इनसे बड़े शहरों में जनप्रवाह को रोकने में भी सहायता मिलती है।

9. भारत में न्यूनतम मजदूरी कानून कब पारित हुआ ? इसके उद्देश्य क्या थे?

उत्तर - भारत सरकार ने श्रमिकों की आर्थिक स्थिति में सुधार लाने के लिए 1948 में यह कानून पारित किया। इसके अनुसार कुछ चुने हुए उद्योगों में मजदूरों को न्यूनतम मजदूरी देना आवश्यक

बना दिया गया। प्रथम पंचवर्षीय योजना में इसे महत्त्वपूर्ण स्थान दिया गया। द्वितीय पंचवर्षीय योजना में यह स्पष्ट रूप से कहा गया कि मजदूरों को कम-से- कम इतनी मजदूरी अवश्य मिलनी चाहिए जिससे वे अपना गुजारा कर सकें तथा साथ ही अपनी कार्यकुशलता भी बनाए रख सकें। तीसरी योजना में मजदूरी बोर्ड की स्थापना की गई। साथ ही बोनस देने के लिए बोनस आयोग बनाया गया।

अर्थव्यवस्था और आजीविका - औद्योगिकीकरण का युग

1. औद्योगिक क्रांति के कारणों का उल्लेख कीजिए ।

अथवा, औद्योगिक क्रांति सर्वप्रथम इंगलैंड में ही क्यों हुई ?

उत्तर - औद्योगिक क्रांति सबसे पहले इंगलैंड में हुई। इसके निम्नलिखित कारण थे।

(i) **इंगलैंड की भौगोलिक स्थिति** - इंगलैंड की भौगोलिक स्थिति उद्योग-धंधों के विकास के अनुकूल थी। कटे हुए समुद्री किनारों के कारण उसके पास अच्छे बंदरगाह थे। इससे उद्योगों के लिए कच्चे माल के आयात एवं निर्मित वस्तुओं के निर्यात की सुविधा उपलब्ध थी।

(ii) **खनिज पदार्थों की उपलब्धता** - यहाँ खनिज पदार्थ प्रचुर मात्रा में उपलब्ध थे। इंगलैंड के उत्तरी और पश्चिमी भाग में उद्योगों के लिए लोहा और कोयला की खदानें थीं।

(iii) **कृषि क्रांति** - 18वीं शताब्दी में इंगलैंड में कृषि क्रांति तथा बाड़ाबंदी से अतिरिक्त उत्पादन हुआ जिससे औद्योगिक क्रांति में सहायता मिली। कारखानों के लिए श्रमिक सहजता से मिल गए।

(iv) **कुशल कारीगर** - इंगलैंड में कुशल कारीगर भी थे। इससे औद्योगिकीकरण में सहायता मिली।

(v) **पूँजी की उपलब्धता** - भूमिपतियों और व्यापारियों के पास पर्याप्त पूँजी उपलब्ध थी। इसे उनलोगों ने उद्योगों में लगाया।

(vi) **वैज्ञानिकों का योगदान** - वैज्ञानिकों ने नए आविष्कार किए जिससे वस्त्र उद्योग, परिवहन, खनन उद्योग एवं संचार व्यवस्था में प्रगति हुई। मशीनों का व्यापक रूप से व्यवहार हुआ।

(vii) **उपनिवेशों से सहायता** - उपनिवेशों; जैसे - भारत से इंगलैंड को उद्योगों के लिए कच्चा माल तथा निर्मित वस्तुओं के लिए बड़ा बाजार मिल गया। इससे औद्योगिकीकरण को बढ़ावा मिला।

(viii) यूरोपीय युद्ध - 18वीं शताब्दी के यूरोपीय युद्धों के लिए युद्ध सामग्रियों की माँग बढ़ गई। इनकी आपूर्ति के लिए कारखाने खुले एवं उद्योग स्थापित किए गए।

(ix) राजकीय संरक्षण - 'मुक्त व्यापार' और 'अहस्तक्षेप की नीति' अपनाकर ब्रिटिश सरकार ने उद्योगों और व्यापार को बढ़ावा दिया। इससे औद्योगिकीकरण का विकास हुआ।

2. औद्योगिकीकरण ने सिर्फ आर्थिक ढाँचे को ही प्रभावित नहीं किया, बल्कि राजनीतिक परिवर्तन का भी मार्ग प्रशस्त किया। कैसे?

उत्तर - औद्योगिकीकरण ने राजनीतिक परिवर्तन का मार्ग प्रशस्त कर दिया। यह परिवर्तन दो स्तरों पर हुआ। सर्वप्रथम, औद्योगिकीकरण के परिणामस्वरूप साम्राज्यवाद और उपनिवेशवाद की भावना विकसित हुई । अपने देश के उद्योगों को चलाने के लिए, कच्चे माल की आपूर्ति तथा कारखानों में निर्मित सामानों की खपत के लिए बाजार की आवश्यकता पड़ी। अतः, प्रत्येक यूरोपीय राष्ट्र अधिक-से-अधिक क्षेत्र पर अधिकार करने के लिए संघर्षरत हो गया। विजित क्षेत्रों में अपने-अपने उपनिवेश स्थापित कर वहाँ के संसाधनों का उपयोग करने की होड़ भी लग गई। इस साम्राज्यवादी और उपनिवेशवादी होड़ में ब्रिटेन तथा फ्रांस अग्रणी थे। साम्राज्यवादी प्रतिस्पर्द्धा ने आगे चलकर विश्वयुद्धों को भी जन्म दिया।

द्वितीय, औद्योगिकीकरण के कारण उत्पन्न समस्याओं के निराकरण का उत्तरदायित्व भी अब सरकार ने अपने ऊपर ले लिया। 1832 में सुधार अधिनियम पारित किया गया। इससे कुछ राहत मिली। 1838 में मताधिकार के लिए चार्टिस्ट आंदोलन हुआ। द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद इंगलैंड की लेबर पार्टी की सरकार ने श्रमिकों की स्थिति में सुधार के लिए अनेक प्रयास किए। भारत में 1881 में पहला फैक्टरी कानून बनाकर मजदूरों की स्थिति में सुधार किया गया। 1948 में न्यूनतम मजदूरी ऐक्ट पारित हुआ। तृतीय पंचवर्षीय योजना में मजदूरी बोर्ड तथा 1962 में राष्ट्रीय श्रम आयोग की स्थापना की गई। मजदूर संगठनों पर विभिन्न राजनीतिक दलों का प्रभाव स्थापित हुआ।

3. औद्योगिक क्रांति का इंगलैंड पर क्या प्रभाव पड़ा ?

उत्तर - अथवा, औद्योगिकीकरण के परिणामस्वरूप होनेवाले परिवर्तनों पर प्रकाश डालें। औद्योगिक क्रांति ने इंगलैंड के आर्थिक, सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन को - व्यापक रूप से प्रभावित किया। इसके निम्नलिखित प्रभाव पड़े।

(i) कारखानेदारी (फैक्टरी) व्यवस्था का उदय और विकास - मशीनीकरण तथा वृहत उत्पादन ने कारखानेदारी प्रथा को जन्म दिया। इंगलैंड में कारखानों का जाल-सा बिछ गया ।

(ii) नगरों के स्वरूप में परिवर्तन - औद्योगिकीकरण के कारण आधुनिक नगरों का उदय हुआ। अनेक नगर औद्योगिक केंद्र बन गए। लंकाशायर, मैनचेस्टर सूती -वस्त्र उद्योग के केंद्र बन गए।

(iii) पूँजीपति वर्ग का विकास - समाज में एक नए पूँजीपति वर्ग का उदय हुआ। कुलीन एवं व्यापारी वर्ग अतिरिक्त पूँजी उद्योगों में निवेश करने लगा। इससे उनका राजनीतिक एवं सामाजिक सम्मान बढ़ गया।

(iv) श्रमिक वर्ग का उदय - कारखानेदारी और औद्योगिकीकरण ने फैक्टरी श्रमिक वर्ग को भी जन्म दिया। कारखानेदारी प्रथा में श्रमिकों का जीवन कष्टदायक बन गया। पूँजीपति उनका शोषण करते थे।

(v) स्त्री-श्रम का विकास - कारखानों में कम मजदूरी पर बड़ी संख्या में स्त्रियों को भी काम में लगाया गया।

(vi) बाल - श्रम की प्रथा - स्त्रियों के समान बच्चों को भी कम मजदूरी पर कारखानों में नियुक्त किया गया। स्त्रियों और बाल-श्रमिकों को भी शोषण का शिकार बनना पड़ा।

(vii) श्रमिक आंदोलन का उदय - शोषित और पीड़ित श्रमिकों ने अपनी स्थिति में सुधार के लिए हड़ताल एवं प्रदर्शन का सहारा लिया। इससे श्रमिक आंदोलन का विकास हुआ। सरकार को इनकी माँगों की ओर ध्यान देना पड़ा। 1832 में सुधार अधिनियम पारित हुआ। मजदूरों ने संगठित होकर चार्टिस्ट आंदोलन भी चलाया।

(viii) स्लम-पद्धति का विकास - औद्योगिकीकरण ने स्लम-पद्धति को भी जन्म दिया। शहरों में श्रमिकों के आवास की समुचित व्यवस्था नहीं थी । अतः, उन्हें गंदी बस्तियों में नारकीय जीवन व्यतीत करना पड़ा।

(ix) उपनिवेशवाद का विकास - औद्योगिकीकरण ने उपनिवेशवाद को बढ़ावा दिया। यूरोपीय राष्ट्रों ने एशिया- अफ्रीका में उपनिवेश स्थापित कर उनका शोषण किया। भारत इंगलैंड का उपनिवेश बन गया।

4. उपनिवेशवाद से आप क्या समझते हैं? औद्योगिकीकरण ने उपनिवेशवाद को कैसे जन्म दिया? वर्णन करें।

उत्तर - उपनिवेशवाद एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके अंतर्गत विकसित राष्ट्रों ने अविकसित राष्ट्रों पर अपना आधिपत्य स्थापित किया । औपनिवेशिक शक्तियों ने आरंभ में वहाँ के आर्थिक संसाधनों का उपयोग किया, परंतु आगे चलकर वहाँ की राजनीतिक व्यवस्था पर भी अधिकार कर लिया। उपनिवेशवाद औद्योगिक क्रांति की देन थी। औद्योगिक क्रांति सबसे पहले इंगलैंड में हुई, इसलिए उपनिवेशवाद का आरंभ भी इंगलैंड से ही हुआ। इंगलैंड के उद्योगों को कच्चा माल उपलब्ध कराने तथा वहाँ के कारखानों में निर्मित सामानों की बिक्री के लिए बाजार की आवश्यकता थी। इसलिए, जैसे-जैसे औद्योगिकीकरण की गति बढ़ी वैसे-वैसे उपनिवेशीकरण में भी तेजी आई। इंगलैंड के अतिरिक्त फ्रांस और जर्मनी भी अपने-अपने उपनिवेश स्थापित किए। उपनिवेशीकरण और औद्योगिकीकरण ने साम्राज्यवाद को भी बढ़ावा दिया। साम्राज्यवादी प्रवृत्ति विश्वयुद्धों का भी कारण बनी। प्रथम और द्वितीय विश्वयुद्धों का यह एक महत्त्वपूर्ण कारण थी। 20वीं शताब्दी में उपनिवेशों में शोषण के विरुद्ध प्रतिक्रिया आरंभ हुई। एशिया और अफ्रीका में स्वतंत्रता संग्राम हुए और आंदोलन चले। इसके परिणामस्वरूप उपनिवेश स्वतंत्र हो गए और उपनिवेशवाद समाप्त हो गया।

5. कुटीर उद्योगों के महत्त्व एवं उनकी उपयोगिता पर प्रकाश डालें।

अथवा, भारतीय अर्थव्यवस्था में कुटीर उद्योगों का क्या महत्त्व था ? स्वतंत्रता- प्राप्ति के बाद सरकार ने इनके विकास के लिए क्या प्रयास किए?

उत्तर - औद्योगिकीकरण के बावजूद भारतीय अर्थव्यवस्था में कुटीर उद्योगों का महत्त्व बना रहा। 1905 के बंग-भंग और स्वदेशी आंदोलन ने कुटीर उद्योगों को पुनर्जीवित कर दिया। गाँधीजी के विदेशी वस्त्रों के बहिष्कार की नीति से भी कुटीर उद्योगों को बढ़ावा मिला। दो विश्वयुद्धों के मध्य कुटीर उद्योग में उत्पादित वस्तुओं के उत्पादन और माँग में वृद्धि हुई। क्षेत्रीय स्तर पर आर्थिक जीवन में कुटीर उद्योग महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते रहे। ये लाखों लोगों को रोजगार के अवसर उपलब्ध कराते हैं, उपभोक्ता वस्तुओं का उत्पादन करते हैं तथा राष्ट्रीय आय का समान वितरण भी सुनिश्चित करते हैं। कुटीर उद्योगों से शिल्पियों एवं कारीगरों के शहरों की ओर पलायन पर अंकुश लगता है। इनमें निर्मित वस्तुओं के निर्यात से भारत का व्यापार बढ़ता है। गाँधीजी के अनुसार, "कुटीर उद्योग भारतीय सामाजिक दशा अनुकूल हैं।"

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भारत सरकार और राज्य सरकारों ने इनके महत्त्व को देखते हुए इन्हें प्रोत्साहन देने के लिए अनेक प्रयास किए हैं। 1948 की औद्योगिक नीति के द्वारा लघु एवं कुटीर उद्योगों को बढ़ावा दिया गया। 1952-53 में लघु उद्योगों एवं ग्रामीण उद्योगों को प्रोत्साहन देने के लिए हथकरघा, सिल्क खादी, नारियल के रेशे आदि के लिए ग्रामीण उद्योग बोर्ड स्थापित किए गए। 1980 के औद्योगिक नीति घोषणापत्र में कृषि-आधारित उद्योगों को विकसित करने पर बल दिया गया।

5. अर्थ-व्यवस्था और आजीविका

1. औद्योगिक क्रांति का प्रयोग सबसे पहले किस व्यक्ति ने किया ?

(a) लुई ब्लाँ ने

(b) राबर्ट ओवन ने

(c) मार्क्स ने

(d) जेम्स वाट ने

Ans – A

2. औद्योगिक क्रांति का अर्थ क्या है?

(a) राजसत्ता में परिवर्तन

(b) सामाजिक व्यवस्था में परिवर्तन

(c) उत्पादन प्रणाली में परिवर्तन

(d) वितरण प्रणाली में परिवर्तन

Ans – C

3. आदि-औद्योगीकरण की क्या विशेषता थी ?

(a) स्थानीय उपयोग के लिए उत्पादन होना

(b) क्षेत्रीय उपयोग के लिए उत्पादन होना

(c) अंतर्राष्ट्रीय बाजार के लिए उत्पादन नहीं होना

(d) उत्पादन विकेंद्रित होना

Ans – D

4. बाड़ाबंदी आन्दोलन कहाँ हुआ?

(a) इंगलैंड में

(b) फ्रांस में

(c) जर्मनी में

(D) रूस में

Ans – A

5. औद्योगिक क्रांति का स्वरूप क्या था?

(a) सर्वहारा वर्गीय क्रांति

(B) बुर्जुआ वर्गीय क्रांति

(C) अभिजात वर्गीय क्रांति

(D) वर्गविहीन क्रांति

Ans – D

6. सेफ्टी लैम्प का आविष्कार किसने किया था?

(a) क्रॉम्पटन

(b) जेम्स हारग्रीव्स

(C) हंफ्री डेवी

(D) जॉन के

Ans – C

7. स्पिनिंग जेनी का आविष्कार किसने किया था?

(a) हम्फ्री डेवी

(B) जॉन के

(c) जेम्स हारग्रीव्स

(d) जेम्सवाट

Ans – C

8. इंगलैंड में औद्योगिक क्रांति किस उद्योग से आरंभ हुई?

(a) वस्त्र उद्योग से

(b) लौह उद्योग से

(c) खान उद्योग से

(d) परिवहन उद्योग से

Ans – A

9. औद्योगिक क्रांति सर्वप्रथम किस देश में हुई?

(a) इंगलैंड में

(b) जर्मनी में

(c) फ्रांस में

(d) अमेरिका में

Ans – A

10. फलाईंग शटल का आविष्कार किसने किया था?

(a) आर्कराइट ने

(b) जेम्स वाट ने

(C) जॉन के ने

(D) अब्राहम डर्बी ने

Ans – C

11. वाष्प इंजन का आविष्कार किसने किया था?

(a) जेम्स वाट

(b) क्राम्पटन

(C) हम्फ्री डेवी

(d) जॉन के

Ans – A

12. जेम्सवाट ने किस यंत्र का आविष्कार किया?

(a) पावरलूम

(b) सेफ्टीलॅप

(c) वाष्प इंजन

(d) फ्लाईंग शटल

Ans – C

13. स्पेनिंग जेनी का आविष्कार कब हुआ?

(a) 1967

(b) 1964

(c) 1773

(d) 1775

Ans – B

14. वाष्पचालित रेल इंजन का आविष्कार किया था

(a) अब्राहम डर्बी ने

(b) जेम्स वाट ने

(c) जार्ज स्टीफेंसन ने

(d) राबर्ट फुल्टन ने

Ans – C

15. टाटा आयरन एण्ड स्टील कम्पनी की स्थापना की गई—

(a) 1854 में

(b) 1907 में

(C) 1915 में

(d) 1923 में

Ans – B

16. 1917 ई० में भारत में पहली जूट मिल किस शहर में स्थापित हुई?

(a) कलकत्ता

(b) दिल्ली

(c) बंबई

(D) पटना

Ans – A

17. भारत में टाटा हाइड्रो-इलेक्ट्रिक पावर स्टेशन की स्थापना कब हुई?

(a) 1910

(b) 1951

(c) 1955

(d) 1962

Ans – A

18. भारत में पहली कपड़ा मिल (बंबई 1854) किसने खोली?

(a) कावसजी नानाजी दाभार

(b) जमशेदजी जीजीभोये

(c) जमशेदजी नुसखानजी हाटा

(d) डिनशॉ पेटिट

Ans – A

19. भारत में कोयला उद्योग का प्रारंभ कब हुआ?

(a) 1907

(b) 1914

(c) 1916

(d) 1919

Ans – B

20. राठरकेला लोहा-इस्पात उद्योग है

(a) ओडिशा में

(b) झारखण्ड में

(c) मध्य प्रदेश में

(d) पश्चिम बंगाल में

Ans – A

21. मुम्बई में प्रथम सूती कपड़ा मिल किस वर्ष स्थापित की गई ?

(a) 1850 में

(b) 1852 में

(c) 1854 में

(d) 1858 में

Ans – C

22. दुर्गापुर स्टील प्लांट किस राज्य में स्थित है?

(a) मध्य प्रदेश

(b) ओडिशा

(c) पश्चिम बंगाल

(d) झारखंड

Ans – C

23. बोकारों इस्पात संयंत्र किस देश के सहयोग से खोला गया है?

(a) जर्मनी

(b) ब्रिटन

(c) मध्यम वर्ग को

(d) संयुक्त राज्य अमेरिका

Ans – C

24. भारत में पहली सूती मिल कहाँ स्थापित की गई ?

(a) सूरत

(b) मुम्बई

(c) अहमदाबाद

(d) कोलकाता

Ans – B

25. बुर्जुवा वर्ग कहते हैं—

(a) श्रमिक वर्ग को

(b) पूँजीपति वर्ग को

(c) मध्यम वर्ग को

(d) व्यापारी वर्ग को

Ans – C

26. ब्रिटेन का एक विशाल उपनिवेश के रूप में कौन सा देश उभरा था ?

(a) चीन

(b) अफ्रीका देश

(c) भारत

(d) जापान

Ans – C

27. गुमाश्ता कौन थे?

(a) अंग्रेज व्यापारी एजेंट

(b) अंग्रेज अधिकारी

(c) पूँजीपति वर्ग

(d) शिल्पकार

Ans – A

28. किस चार्टर एक्ट के द्वारा व्यापार से ईस्ट इंडिया कंपनी का एकाधिपत्य समाप्त कर दिया?

(a) 1858

(b) 1909

(c) 1813

(d) 1935

Ans – C

29. भारत में कारखानों की स्थापना कब से शुरू हुई?

(a) 1840 के बाद

(b) 1845 के बाद

(c) 1750 के बाद

(d) 1850 के बाद

Ans – D

30. इंगलैंड में चार्टिस्ट आंदोलन हुआ-

(A) 1838 में

(B) 1881 में

(C) 1918 में

(d) 1932 में

Ans – A

31. इंगलैंड में सभी स्त्री एवं पुरुषों को वयस्क मताधिकार कब प्राप्त हुआ?

(a) 1838

(b) 1881

(c) 1918

(d) 1932

Ans – C

32. 'अखिल भारतीय ट्रेड यूनियन कांग्रेस' की स्थापना कब हुई?

(a) 1848

(b) 1881

(c) 1885

(d) 1920

Ans – D

33. भारत में पहला फैक्ट्री कानून किस वर्ष बना?

(a) 1838 में

(b) 1858

(c) 1881 में

(d) 1911 में

Ans – C

34. भारत में मजदूरी बोर्ड की स्थापना किस पंचवर्षीय योजना में की गई?

(a) प्रथम

(b) द्वितीय

(c) तृतीय

(d) चतुर्थ

Ans – C

35. भारत में न्यूनतम मजदूरी कानून किस वर्ष पारित हुआ?

(a) 1881 में

(b) 1926 में

(c) 1947 में

(d) 1948 में

Ans – D

36.राष्ट्रीय श्रम आयोग की स्थापना किस वर्ष हुई?

(a) 1948 में

(b) 1958 में

(c) 1962 में

(d) 1965 में

Ans – C

37. औद्योगिक नीति घोषणा कब जारी हुआ था?

(a) जुलाई, 1980

(b) अगस्त, 1980

(c) जुलाई, 1981

(d) अगस्त, 1981

Ans – A

38. भारत सरकार की किस औद्योगिक नीति के द्वारा लघु एवं कुटीर उद्योग को प्रोत्साहन दिया गया?

(a) 1935 की

(b) 1947 की

(c) 1948 की

(d) 1952 की

Ans – c

39. रेशम मार्ग कहाँ से आरंभ होता था?

(a) भारत

(b) चीन

(c) वर्मा

(d) तिब्बत

Ans – B